हरिभूमि
जींद-कैथल भूमि
रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

तापमान
अधिकतम 31.0 डिग्री
न्यूनतम 17.0 डिग्री

ईमानदारी से जिम्मेदारियों को कर्तव्यनिष्ठा के साथ पूर्ण करें 11

आढ़तियों को नहीं होगी कोई परेशानी: कर्मवीर 11

ईसाई प्रार्थना सभा के नाम पर धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का आरोप

महादेव कॉलोनीवासियों का धर्म परिवर्तन को लेकर जमकर हंगामा

मुख्यमंत्री नायब सैनी के नाम भाजपा जिलाध्यक्ष को सौंपा मांगपत्र

विरोध के बावजूद पुलिस ने दी सभा की अनुमति

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कैथल

महादेव कालोनी सिरटा रोड के निवासियों ने जाट धर्मशाला के पीछे एक खाली प्लाट में ईसाई प्रार्थना सभा के नाम पर धर्म परिवर्तन करने के लिए प्रेरित करने के बड़े आरोप लगाए हैं। कालोनी के सैकड़ों लोगों ने शनिवार को भाजपा जिलाध्यक्ष ज्योति सैनी को मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नाम अपना ज्ञापन सौंपा। कालोनी वासियों का नेतृत्व वार्ड के पूर्व पार्षद सुरेंद्र पहलवान एवं आशा रानी ने किया। वार्ड के पूर्व पार्षद सुरेन्द्र पहलवान ने कहा कि कि यहां पिछले तीन रविवार से ईसाई धर्म अपना चुके लोगों द्वारा ईसाई प्रार्थना सभा का आयोजन किया जा रहा है। उस आयोजन में प्रशासन की पहले कोई अनुमति नहीं ली गई थी। पिछले रविवार को जब ईसाई प्रार्थना सभा के नाम पर धर्म परिवर्तन के लिए महिलाओं एवं बच्चों को प्रेरित किया जा रहा था तो कालोनी वासियों ने इस बात का खुलकर विरोध किया। इस संबंध में कालोनी वासियों ने 22 को पुलिस अधीक्षक एवं थाना प्रभारी को लिखित शिकायत दी थी।

धर्म परिवर्तन के विरोध परिवर्तन भाजपा जिलाध्यक्ष ज्योति सैनी को ज्ञापन सौपते शहरवासी।

सांप्रदायिक अशांति की आशंका

मुख्यमंत्री के नाम भेजे ज्ञापन में बताया कि ईसाई प्रार्थना सभा में तेज ध्वनि वाले साउंड सिस्टम का प्रयोग होता है जिससे कॉलोनी वासियों, विशेषकर बच्चों की पढ़ाई और बुजुर्गों की तबीयत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही ज्ञापन के माध्यम से मुख्यमंत्री को अवगत करवाया जा रहा है कि इन ईसाई प्रार्थना सभा कार्यक्रमों के दौरान जब गली, मोहल्लों में महिलाएं घरों में अकेले होती हैं तो उन्हें प्रार्थना सभा कीर्तन में बुलाकर ईसाई धर्म अपनाने हेतु प्रेरित भी किया जा चुका है जिस बारे में प्रशासन को भी अवगत करवाया जा चुका है। ज्ञापन के माध्यम से सरकार को इस पूरे मामले से अवगत करवाया गया है कि भविष्य में इस तरह के ईसाई प्रार्थना सभा के आयोजन से किसी प्रकार की धार्मिक या सांप्रदायिक अशांति की आशंका बनी हुई है।

सांप्रदायिक अशांति की आशंका

सभी कॉलोनी वासियों ने सरकार से निवेदन किया है कि इस प्रकार के आयोजित होने वाले ईसाई धार्मिक आयोजनों को तत्काल प्रभाव से रोका जाए। ईसाई प्रार्थना सभा के कार्यक्रम आयोजकों के दस्तावेजों की जांच कर उचित वैधानिक कार्रवाई की जाए। यदि भविष्य में इस प्रकार के आयोजन होते हैं, तो उनसे धार्मिक सांप्रदायिक उन्माद या झगड़े बड़े स्तर पर होने की संभावना हैं इसलिए धार्मिक या सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाले ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

जल्द संज्ञान लिया जाएगा

कालोनी वासियों ने सरकार पर विश्वास जताते कहा कि वह आश्वस्त है कि इस मामले में मुख्यमंत्री नायब सैनी अवश्य ही इस गंभीर विषय पर शीघ्र संज्ञान लेकर आवश्यक कार्यवाही करेंगे ताकि क्षेत्र में शांति, कानून व्यवस्था एवं सामाजिक समरसता बनी रहे। वहीं इस मामले में जिलाध्यक्ष ज्योति सैनी ने कहा कि कालोनी वासियों के ज्ञापन को मुख्यमंत्री तक पहुंचा दिया जाएगा।

एक माह से हर रविवार को आयोजन

उसके बाद पता चला कि प्रशासन को जानकारी अवगत करवाने के बाद भी प्रशासन द्वारा उन्हें ऐसे आयोजन करने की अनुमति दे दी गई है। पूर्व पार्षद सुरेंद्र ने कहा कि पिछले एक महीने से हर रविवार को होने वाले इस आयोजन पर तुरंत प्रभाव से रोक लगाने के लिए समस्त कॉलोनी वासियों ने जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन से आग्रह किया था लेकिन कालोनी वासियों को सूचना प्राप्त हुई है कि उनके विरोध के बावजूद प्रशासन द्वारा ईसाई प्रार्थना सभा के लिए इनके आयोजकों को पूरी तरह परमिशन दे दी गई।

तमाम कॉलोनीवासी परेशान

जिससे अब कॉलोनी वासियों को भविष्य में अपने बच्चों के लिए भी धर्म परिवर्तन का डर सताने लगा है। पहले तो यह आयोजन बिना प्रशासनिक अनुमति के टैंट लगाकर किया जा रहा था लेकिन प्रशासन की अनुमति मिलने के बाद ईसाई प्रार्थना सभा के नाम पर धर्म परिवर्तन को बेधड़क करवाने की आशंका अब तमाम कॉलोनी वासियों को सता रही है।

खबर संक्षेप

ट्रेन की चपेट में आने से अज्ञात व्यक्ति की मौत

जींद। दिल्ली-बठिंडा रेलमार्ग पर वीटा प्लांट के पास ट्रेन की चपेट में आने से व्यक्ति की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। शव को कब्जे में ले नागरिक अस्पताल के शव गृह में रखवा दिया है। मृतक के पास से ऐसा कुछ नही मिला है। जिससे उसकी शिनाख्त हो सके।

फरल में कार की टक्कर से एक व्यक्ति की मौत

कैथल। जिले में पूंडरी क्षेत्र के गांव फरल में कार की टक्कर से 39 वर्षीय व्यक्ति की मौत हो गई। व्यक्ति गांव के मुख्य रास्ते पर जा रहा था। जैसे ही वह गांव के बाहर पहुंचा, तो एक कार ड्राइवर ने तेज गति व लापरवाही से वाहन चलाते हुए उसे टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। बाद में उसकी मौत हो गई।

बाइक सवारों ने हमला कर राहगीर को किया घायल

जींद। गांव डूमरखां कलां निजी स्कूल के पास दो बाइकों पर सवार 4 युवकों ने व्यक्ति पर हमला कर घायल कर दिया। सदर थाना नरवाना पुलिस ने घायल की शिकायत पर अज्ञात बाइक सवारों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डूमरखां सुदकैन कलां निवासी अनिल ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह गत 21 देर शाम को गांव डूमरखां कलां से अपने घर जा रहा था।

बैलों को गोकसी के लिए गाड़ी में चढ़ाया, केस दर्ज

कैथल। कलायत पुलिस में तीन बैलों को गोकसी के लिए एक गाड़ी में चढ़ाने के आरोप में दो अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज किया है। दीपक ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 24 को दो व्यक्तियों ने सामान ले जाने के लिए उसकी गाडी बुक की थी। जैसे ही वह गाडी लेकर आया तो युवाओं ने सामान के बहाने उसकी गाडी में गोख्सी के लिए तीन बैल चढा दिए।

चाकू से हमला कर घायल करने पर दो नामजद

जींद। गांव खरल में युवक के साथ मारपीट करने तथा चाकू से हमला कर घायल करने पर गढ़ी थाना पुलिस ने दो लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव तारखां निवासी अमित ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह रिश्तेदारी में गांव खरल गया हुआ था। जहां पर उसकी गांव खरल निवासी उदित तथा अमन से कहासुनी हो गई।

बिजली निगम के स्टोर से सामान चुराया, केस

कैथल। कस्बा कलायत से चोर बिजली निगम के स्टोर से हजारों रुपए का सामान चुरा कर ले गए। भाखड़ा जल सेवा के उपमंडल अधिकारी रविंद्र कुमार ने कलायत पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 20 अक्टूबर को रात को चोर सिरसा ब्रांच नहर कलायत में बने स्टोर से मोटर से तांबा की तार व 100 अंपायर सेल चुरा कर ले गए।

विदेश भेजने का झांसा देकर बीस हजार हड़पे

जींद। विदेश भेजने का झांसा दे बीस हजार रुपये हड़पने तथा पासपोर्ट न लौटाने पर उचाना थाना पुलिस ने एक व्यक्ति के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। गांव बधाना निवासी विक्रम ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह विदेश जाने का इच्छुक था।

दो महिलाएं घर से लापता, मामला दर्ज

कैथल। अलग-अलग स्थान से दो महिलाएं बिना बताए घर से चली गई। पहले मामले में एक व्यक्ति ने आरोप लगाया कि उसकी बेटी गांव बंदराना से बिना बताए घर से चली गई। दूसरे मामले में गांव सजुमा के एक व्यक्ति ने आरोप लगाया कि 23 अक्टूबर को दोपहर करीब 11:00 बजे उसकी पत्नी बिना बताए घर से चली गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

डाहौला में पीडब्लूडी द्वारा बनाई सड़क पर खड़ा कालोनी से निकासी का गंदा पानी।

डाहौला गांव में उखाड़ी सड़क, लोग घरों में कैद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| अलेवा

गांव डाहौला में पीडब्लूडी विभाग द्वारा करीब चार-पांच दिन पूर्व उखाड़ी सड़क एक दलदल का रूप ले चुकी है। जिसके चलते सड़क के साथ लगती कालोनी के लोग घरों में कैद होकर रह गए हैं। जिसके कारण कालोनी के लोगों में जिला प्रशासन के प्रति रोष है। डाहौला निवासी कृष्ण, दर्शन, प्रेम, संदीप, राजेश, शिवकुमार आदि ने बताया कि पीडब्लूडी द्वारा गांव के जलघर से लेकर शामदों रोड़ तक सड़क का निर्माण कार्य जारी है, लेकिन विभाग के अधिकारियों ने करीब चार से पांच दिनों से सड़क उखाड़ कर अधूरी छोड़ दी है।

जिसके कारण कालोनी का समस्त गंदा पानी नालों के अभाव के चलते सड़क पर पहुंचकर एक दलदल का रूप ले चुका है। लोगों को पांच दिनों से घरों से निकलना भी दुबर हो गया है। यह अधूरी सड़क वाहन चालकों व कालोनी के लोगों के लिए आफ त बनी हुई है। अधूरी छोड़ी सड़क पर गंदा पानी खड़ा होने के कारण लोगों को दुपहिया वाहनों के साथ गुजरना तो दूर की बात पैदल चलने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गांव में जाने का मुख्य रास्ता होने के कारण स्कूली अध्यापकों के अलावा बच्चों तथा बाहर से आने वाले लोगों को अपने स्थान तक पहुंचने के लिए गांव के दूसरे छोर से गुजरना पड़ रहा है। जिसके कारण लोगों को काफी परेशानी बनी हुई है।

जल्द बनेगी सड़क

पीडब्ल्यूडी के जेई बिट्टू ने बताया कि दीवाली पर लेबर की छुटटी आदि होने के कारण थोड़ा समय लगा है। जल्द ही सड़क निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए एसडीओ के साथ स्वयं जाकर गांव का दौरा किया है। सड़क के साथ नाले बनाना विभाग की ड्राइंग में नहीं है। अगर पंचायत नाले बनाए तो गांव के लोगों की समस्या का स्थाई समाधान हो जाएगा।

युवक को फ्री फायर खेलना पड़ा मंहगा, खाते से 2.71 लाख गायब

साइबर थाना पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ दर्ज किया मामला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

गांव डिंडोली के युवक को फ्री फायर खेलना महंगा पड़ गया। साइबर ठगों ने युवक के पिता के खाते से दो लाख 71 हजार रुपये उड़ा लिए। साइबर थाना पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव डिंडोली निवासी सुनील ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह रोजगार की तलाश में है। उसने मोबाइल फोन पर फ्री फायर गेम लोड किया हुआ है। वह फ्री फायर खेलता है। गत तीन सितंबर फायर फ्री गेम खेलते समय उस कमाने का आफर मिला। जिसमें उसे फायदा दिखाया गया। झांसें में आकर उसने सामने वाली पार्टी के साथ रुपये लगा कर फ्री फायर गेम खेलना शुरू कर दिया। उसके गेम खेलने का सिलसिला 21 अक्टूबर तक जारी रहा। राशि रिर्टन करने की बजाय उस पर गेम खेलने का दबाव बनाया जाने लगा। जब तक उसे ठगी का अहसास होता तब तक उसके पिता के खाते से दो लाख 71 हजार 368 रुपये गायब हो चुके थे। साइबर थाना पुलिस ने सुनील की शिकायत पर अज्ञात लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

मामला दर्ज

साइबर थाना के जांच अधिकारी संदीप ने बताया कि फ्री फायर खेलने के दौरान झांसा देकर धोखाधड़ी की गई है। फिलहाल मामला दर्ज कर लिया गया है। उन्होंने लोगो से अपील की कि वे साइबर ठगों के झांसे में न आएं। जागरूक रहना ही बचाव है।

सीवन नगर में बाईपास निर्माण की उठी मांग

- मुख्य बाजार में जाम के कारण आमजन का जीना दूभर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सीवन

नगर का मुख्य बाजार कैथल–पटियाला मुख्य मार्ग पर स्थित है, जो पूरे क्षेत्र का सबसे व्यस्त इलाका माना जाता है। इस मार्ग के दोनों ओर दुकानें और व्यावसायिक प्रतिष्ठान बने हैं। यही मार्ग कैथल–पटियाला स्टेट हाईवे होने के कारण यहां दिनभर भारी यातायात बना रहता है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि नगर में कोई बाईपास या वैकल्पिक मार्ग नहीं है, जिसके चलते ट्रक, बसें और अन्य भारी वाहन भी नगर के बीचों बीच होकर ही गुजरते हैं। इससे मुख्य बाजार में हर समय जाम की स्थिति बनी रहती है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि जाम की समस्या अब लोगों के लिए रोजमर्रा की परेशानी बन चुकी है। अधिवक्ता गौरव वधवा, राजेश रहेजा, जरनैल सिंह, नरेश मित्तल, संगीत बंसल, राजकुमार वधवा, अभिषेक मेहता, महावीर मंगला, विकी ग्रोवर, इंद्रजीत मदान ने बताया कि नगर का मुख्य मार्ग सरकारी व प्रशासनिक दफ्तरों से घिरा हुआ है। इसी मार्ग पर सरकारी स्कूल, खंड कार्यालय, नगर पालिका कार्यालय, बैंक, बिजली घर, थाना व अन्य कई विभागीय कार्यालय स्थित हैं। इन दफ्तरों में आने-जाने वाले लोगों को वाहन पार्किंग की जगह न मिलने के कारण अपने वाहन सड़क पर ही खड़े करने पड़ते हैं, जिससे सड़क और भी संकरी हो जाती है।

सीवन। सीवन में मेनरोड पर लगा जाम। *फोटो : हरिभूमि*

भारी वाहन प्रवेश न करें

स्थानीय निवासियों ने प्रशासन और सरकार से मांग की है कि सिविल नगर में जल्द से जल्द एक बाईपास मार्ग का निर्माण करवाया जाए, ताकि भारी वाहन नगर में प्रवेश न करें और सीधे बाहर से ही निकल जाएं। इससे नगर में जाम की समस्या से राहत मिलेगी और बाजार में आवाजाही सुचारू रूप से हो सकेगी। लोगों का कहना है कि यदि इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया गया, तो आने वाले समय में यह स्थिति और भी विकराल रूप ले सकती है।

दो की डेंगू पॉजिटिव मिली रिपोर्ट, आंकड़ा 54 पहुंचा

तीन मामले चिकनगुनिया के विभाग को भी मिल चुके

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

स्वास्थ्य विभाग को शनिवार को जिले में डेंगू की दो पॉजिटिव रिपोर्ट मिली है। जिसके चलते जिला में डेंगू मरीजों की संख्या 54 हो गई है। वहीं अबतक स्वास्थ्य विभाग को तीन मामले मलेरिया के और तीन ही मामले चिकनगुनिया के भी मिल चुके हैं। स्वास्थ्य विभाग को जो रिपोर्ट मिली है उसमें गांव भौंगरा निवासी 62 वर्षीय व्यक्ति व सिंघाना निवासी 31 वर्षीय व्यक्ति शामिल है। इस पर स्वास्थ्य विभाग ने आसपास क्षेत्र में जांच अभियान चलाया। स्वास्थ्य विभाग की टीमें फील्ड में हैं और टीमों द्वारा बीमार लोगों के खून के सैंपल लिए जा रहे हैं और इनकी जांच करवाई जा रही है। जिनकी रिपोर्ट पाजिटिव आ रही है, उनके आस-पास रहने वाले लोगों के खून के सैंपल लिए जा रहे हैं। जिला मलेरिया अधिकारी डा. बिजेंद्र ढांडा ने कहा कि विभाग का प्रयास है कि डेंगू का डंक तोड़ा जाए। इसके लिए विभाग लगातार काम कर रहा है। जिस एरिया में डेंगू का मरीज मिल रहा है, वहां पर सर्वे करवाया जा रहा है।

20 साल या उससे अधिक पुराने मकानों को वैध करने का अवसर

जिले से सात केस सरकार को मंजूरी के लिए भेजे

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

एडीसी विवेक आर्य ने बताया कि गांवों की शामलात भूमि पर बने पुराने अवैध मकानों को वैध रूप से नियमित करने के लिए हरियाणा सरकार द्वारा एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की गई है। यह प्रक्रिया केवल उन ग्रामीण निवासियों पर लागू होगी, जिसमें कम क्षेत्रफल की जोहड़ की जमीन एवं ऐसी भूमि जिससे रास्ते में रुकावट हो उसे छोड़कर जिन्होंने 500 वर्ग गज या शामलात देह की गैर कृषि भूमि पर 31 मार्च 2004 से पहले मकान बना लिया था। एडीसी विवेक आर्य ने जानकारी देते हुए बताया कि संबंधित व्यक्ति को ग्राम पंचायत को आवेदन देना होगा। जिसमें यह स्पष्ट करना होगा कि मकान 31 मार्च 2004 से पहले बनाया गया है। इसके साथ जमाबंदी, खसरा गिरदावरी, साइट प्लान, मकान के फोटोग्राफ एवं कब्जा साबित करने वाले दस्तावेज संलग्न करने होंगे। साथ ही पंचायत द्वारा भूमि उपयोग योजना भी तैयार की जाएगी। ग्राम सचिव इस प्रस्ताव को आवश्यक दस्तावेजों सहित बीडीपीओ को भेजेगा। बीडीपीओ निरीक्षण रिपोर्ट तैयार कर प्रस्ताव को डीसी के पास भेजेगा।

आमजन से अपील

उन्होंने आमजन से अपील की है कि जिनका कब्जा शामलात भूमि पर है वे अपने कब्जे संबंधी दस्तावेजों सहित समस्त आवश्यक प्रमाण शीघ्र अति शीघ्र खंड विकास कार्यालय में जमा करवाएं ताकि समय पर नियमन की प्रक्रिया पूर्ण की जा सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि जोहड़ के रास्ते की भूमि पर किसी भी प्रकार का कब्जा वैध नहीं किया जाएगा।

61.390 किलो ग्राम डोडा पोस्त बरामदगी मामले में दूसरा सप्लायर गिरफ्तार

कैथल। युवा वर्ग को नशे की लत से बचाने के लिए एसपी उपासना के आदेशानुसार नशा तस्करों की जड़ मूल तक पहुंचते हुए 61 किलो 390 ग्राम डोडा पोस्त पोस्त सप्लाई मामले की जांच एंटी नारकोटिक सैल प्रभारी एसआई राजबीर सिंह की अगुवाई में एसआई नरेंद्र सिंह की टीम द्वारा करते हुए आरोपी गांव सालवन जिला करनाल निवासी बबली को काबू कर लिया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि 9 अगस्त की रात्रि एंटी नारकोटिक सैल प्रभारी एसआई राजबीर सिंह की टीम द्वारा गांव हरिगढ किंगन निवासी जयभगवान उर्फ जैबा को उसके मकान पर दबिश देकर गली में से एक गाड़ी सहित काबू किया गया था। जिसके कब्जे में गाड़ी में रखे 3 प्लास्टिक कट्टो से 61 किलो 390 ग्राम डोडा पोस्त बरामद हुआ था। आरोपी के खिलाफ थाना चीका में मामला दर्ज करके आगामी कार्रवाई एएसआई नरेंद्र सिंह द्वारा अमल में लाई गई। आरोपी जय भगवान का व्यापक पूछताछ के लिए 5 दिन पुलिस रिमांड हासिल किया गया था।

कैथल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित।

आज छठी मैया को प्रसाद का भोग लगा 36 घंटे निर्जला व्रत रखेंगे श्रद्धालु

नहाय और खाय के साथ छठ महापर्व की शुरुआत

जींद में पूर्वांचल के लगभग सात हजार लोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जींद

नहाय व खाय से करने के साथ शनिवार को छठ पूजा की शुरुआत हो गई। जिले में पूर्वांचल के लगभग सात हजार लोग रह रहे हैं। जो छठ पर्व श्रद्धा व धूमधाम से मनाते हैं। खरना के दिन छठी मैया को प्रसाद का भोग लगाने के बाद 36 घंटे के कठोर निर्जला व्रत की शुरुआत करेंगे। गुड़ के मीठे चावल, सुहारी का प्रसाद बनाया गया। छठी मैया को भोग लगाने के बाद ही श्रद्धालुओं ने प्रसाद का भोग लगाया। निर्जला व्रत का समापन उगते हुए सूर्य को अघ्र्य देने के बाद होता है। जो इस बार 28 अक्टूबर को रहेगा। इस दिन महिलाएं नदी में खड़े होकर उगते हुए सूर्य को अघ्र्य देंगी हैं। हिंदू मान्यता के अनुसार छठ व्रत को करने से व्यक्ति को सुख व सौभाग्य का वरदान प्राप्त होता है। पूरे साल छठी मैया की कृपा बरसती रहती है। पूर्वांचल प्रकोष्ठ के प्रधान संतोष कुमार ने बताया कि हर बार की तरह इस बार भी छठ महापर्व को धूमधाम से मनाया जाएगा। छठ पूजा को महापर्व की भांति हर्षोल्लास से मनाया जाता है। महापर्व की तैयारियां पहले से की पूरी कर ली गई हैं। रविवार को खरना छठ पूजा का दूसरा दिन है। इसका धार्मिक, सांस्कृतिक रूप से बहुत महत्व है। खरना के दिन छठी मैया उपासना की जाती है। यह व्रत शारीरिक, मानसिक शुद्धि के लिए किया जाता है। खरना के दिन बनाए प्रसाद को देवताओं को अर्पित करने के बाद ही ग्रहण किया जाता है।

आज खरना करेंगी पूर्वांचल के लोग

इस व्रत का दूसरा पडाव खरना कहलाता है। 26 अक्टूबर को इस दिन लोग संझवत की परंपरा को निभाते हुए जल स्थान पर जाकर स्नान, ध्यान करने के बाद दीपक जलाएंगे। इसके बाद छठ पूजा के दिन संध्याकालीन अघ्र्य दिया जाएगा। 27 अक्टूबर यानि छठ पूजा के तीसरे दिन सोमवार को भगवान सूर्य को संध्याकालीन अघ्र्य दिया जाएगा और 28 अक्टूबर को छठ पूजा के आखिरी दिन उगते हुए सूर्य देवता को प्रातःकालीन अघ्र्य देकर साधक अपने व्रत को पूर्ण करते हैं।

आधुनिकता की चकाचौंध में खो रहा कार्तिक माह का महत्व

कन्याओं के गीत आधुनिकता की चमक दमक में खोकर रह गए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राजौंद

कार्तिक माह कल समापन हो रहा है। परंतु आधुनिकता में दबा उत्साह व कार्तिक माह के गीतों की गूंज कार्तिक माह का महत्व जरा भी दिखाई नहीं दिया। कार्तिक माह की शुरूआत दशहरा पर्व से पांच दिन बाद आने वाली पूर्णिमा से होती है। बीते जमाने में इस महीने में सुबह होने से पहले ही कन्याओं के साथ बुजुर्ग महिलाएं व नवविवाहित महिलाएं भी सामूहिक रूप से नगर व गांवों के तालाब, नहरों इत्यादि में स्नान करती थी। परम्परा के मुताबिक कार्तिक स्नान करने वाली कन्याएं तालाब के किनारे मिट्टी की पथवारी बनाती थी व इसकी सिंचाई कर जो उगा लेती थी तथा सभी एकत्रित होकर इसकी पूजा अर्चना कर परम्परागत गीत गाती थी। परंतु अब नगर व गांवों में तालाबों व मंदिरों में पथवारी के चारों ओर बैठकर कार्तिक माह में गूंजने वाले कन्याओं के गीत आधुनिकता की चमक दमक में खोकर रह गए हैं। हिन्दुओं में कार्तिक माह का बहुत ही बड़ा महत्व है लेकिन अब पश्चिम सभ्यता की मार से कार्तिक माह भी महत्वहीन होकर रह गया है।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | बिजनेस डेस्क

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाईज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला
जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

"बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी"

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्युमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है. कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्प्शन की झंझट नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

- यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा
- जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी
- पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे, लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा
- यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,
- आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्प्शन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि "इंस्टेंट रिडेम्प्शन" के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

खबर संक्षेप

ब्राह्मण धर्मशाला में होगा हवन, भजन कार्यक्रम आज

उचाना। बस स्टैंड के पास स्थित ब्राह्मण धर्मशाला में 26 अक्टूबर को सुबह मासिक हवन एवं भजन कार्यक्रम होगा। शिक्षाविद माण रामप्रसाद ने बताया कि बीते कुछ महीनों से महीने के अंतिम रविवार को हवन एवं भजन कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। मुख्य यजमान के रूप में ब्राह्मण चौबीसी प्रधान अनिल शर्मा पहुंचेंगे।

दिव्यांग छात्रवृति योजना के लिए आवेदन 31 तक

जींद। दिव्यांग छात्रों के लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग केंद्र सरकार द्वारा संचालित पोस्ट मैट्रिक, प्री मैट्रिक व टॉप क्लास एजुकेशन स्कॉलरशिप योजना चलाई जा रही हैं। जिसके तहत दिव्यांग छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करने का प्रावधान है। एडीसी विवेक आर्य ने बताया कि योजना लाभ प्राप्त करने के लिए छात्रों को पोर्टल स्कॉलरशिप डॉट जीओवी डॉट इन पर आवेदन करना होगा।

स्कूल के निकली दो छात्राएं संदिग्ध हालात में लापता

जींद। गांव डूमरखां कलां में घर से स्कूल के लिए निकली दो छात्राओं के संदिग्ध हालात में गायब होने पर सदर थाना नरवाना पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज किया है। डूमरखां कलां निवासी एक व्यक्ति ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 17 वर्षीय बेटी गांव के स्कूल में ग्यारहवीं की छात्रा है। गत दिवस उसकी बेटी पढ़ने वाली सहपाठी के साथ घर से स्कूल के लिए निकली थी।

मेंहदी रचाओ व रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

जींद। पेगां गांव के सीआर पब्लिक स्कूल में मेंहदी रचाओ व रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल प्राचार्य बलिंद्र नरवाल ने की तथा मुख्य रूप से स्कूल प्रबंधक राजबीर बिढान व मनफूल ढांडा ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। रंगोली प्रतियोगिता में 10 वीं कक्षा से परमीत, अंशुल ने प्रथम, जबकि 11वीं कक्षा से नीशु तथा खुशबू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधिमंडल रवाना

जींद। करनाल में शनिवार से शुरू हो रहे सीटू हरियाणा के 15वें त्रिवार्षिक राज्य सम्मेलन के लिए जींद जिला से 22 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल सीटू के जिला अध्यक्ष रमेश चंद्र की अगुवाई में करनाल के लिए रवाना हुआ। इस त्रिवार्षिक सम्मेलन में आगामी तीन सालों के लिए नई राज्य कमेटी का चुनाव किया जाएगा और आंदोलनों की रूपरेखा बनाई जाएगी।

अहिरका के छात्रों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

जींद। आर्य वमावि अहिरका द्वारा आयोजित शैक्षिक भ्रमण मनाली, रोहतांग पास, अटल टनल एवं सिसु वैली अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। विद्यार्थियों ने भ्रमण में पर्वतीय सौंदर्य, हिमाच्छादित क्षेत्रों एवं हिमालयी वातावरण का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया। अटल टनल, जो विश्व की सबसे ऊंची एवं आधुनिक तकनीक से निर्मित सुरंगों में से एक है का अवलोकन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत ज्ञानवर्धक रहा।

श्री श्याम वंदना महोत्सव 29 को

जींद। श्री श्याम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में श्री श्याम प्रचार महिला समिति जींद द्वारा 29 को तीसरा भव्य श्री श्याम वंदना महोत्सव का आयोजन सेठों वाली धर्मशाला घंटाघर चौक जींद में किया जा रहा है। कार्यक्रम में हरियाणा सरकार के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा व नप जींद की चेयरपर्सन अनुराधा सैनी, डा. पूजा बंसल और किन्नर समाज से सीमा महंत मुख्यअतिथि के रूप में शिरकत करेंगे।

जमीन विवाद में पिता से मारपीट, तीन पर केस

जींद। दबलैन में जमीन को लेकर कहासुनी के चलते बुजुर्ग पिता के साथ मारपीट करने पर सदर थाना नरवाना पुलिस ने बेटे समेत तीन लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। गांव दबलैन निवासी चांदी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसका बेटे संदीप के साथ जमीन को लेकर कहासुनी हो गई।

डीइओ ने किया आरोही मॉडल स्कूल का निरीक्षण

ईमानदारी से जिम्मेदारियों को कर्तव्यनिष्ठा के साथ पूर्ण करें

बालिकाओं को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में पूछताछ की

बंधित रिकॉर्ड का गंभीरता के साथ निरीक्षण किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

आरोही मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल ग्योंग में जिला शिक्षा अधिकारी सुरेश कुमार औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों से संबंधित रिकॉर्ड का गंभीरता के साथ निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान परीक्षा शाखा, एस एम सी रजिस्टर, दैनिक रजिस्टर, कैश बुक, बुनियाद केंद्र, पीटीएम रजिस्टर, प्रार्थना सभा रजिस्ट्रेशन, मूवमेंट रजिस्टर शिकायत पेटिका, विद्यार्थी उपस्थिति रजिस्टर, अध्यापक डायरी के साथ साथ सभी प्रयोगशालाओं की क्रियाशीलता एवं उपयोगिता को जांचा। निरीक्षण के दौरान बुनियाद केंद्र, अटल टिंकरिंग लैब, पुस्तकालय, डिजिटल लाइब्रेरी एवं कंप्यूटर लैब्स की उपयोगिता एवं गतिविधियो का भी निरीक्षण किया।

जिला शिक्षा अधिकारी सुरेश आरोही मॉडल स्कूल ग्योंग का निरीक्षण करते।

रिकॉर्ड अभिलेखन को दुरुस्त किया जाए

जिला शिक्षा अधिकारी सुरेश कुमार ने विद्यालय प्रधानाचार्य को आदेश देते हुए कहा कि विद्यार्थियों की रेगुलर हाजिरी को सुनिश्चित किया जाए जो विद्यार्थी लगातार कई दिन विद्यालय नहीं आ पा रहे उनके अभिभावकों से संपर्क करके कारण जानने की कोशिश की जाए। उन्होंने कहा की प्रार्थना सभा में आज का विचार सामान्य ज्ञान आज का विषय प्रतिदिन के समाचार पत्र इत्यादि गतिविधि सुचारू रूप से करवाई जाए। उन्होंने प्रधानाचार्य को कहा कि विद्यालय के रिकॉर्ड अभिलेखन को दुरुस्त किया जाए।

इस दौरान विद्यालय में बालिकाओं के लिए स्थापित बालिका छात्रावास का भी निरीक्षण किया। इस दौरान बच्चों को मिलने वाले खाने की गुणवता एवं बालिकाओं को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में पूछताछ की। निरीक्षण के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी ने छात्रावास में रह रही बालिकाओं के दैनिक गतिविधियों के बारे में भी जानकारी ली। इस दौरान जिला शिक्षा अधिकारी सुरेश कुमार ने अध्यापकों को भी निर्देश देते कहा कि सभी अध्यापक अपना कार्य इमानदारी से करें तथा विद्यालय से सम्बन्धित अपनी अपनी जिम्मेवारियों को कर्तव्य निष्ठा के साथ पूर्ण करें।

ये मिली खामियां

औचक निरीक्षण के दौरान विद्यालय में डायरी डिस्पैच रजिस्टर मेंटेन नहीं था। सुझाव और शिकायत पेटी मौके पर नहीं लगाई गई थी। विद्यालय में करियर काउंसलिंग चार्ट नहीं लगा हुआ था। विद्यार्थियों की अनुपस्थिति रजिस्टर मेंटेन नहीं था। तंबाकू फ्री क्षेत्र का पोस्टर विद्यालय परिसर में नहीं मिला। फिजिक्स और अटल टिंकरिंग लैब को भी दुरुस्त करने के आदेश दिए। उनके साथ जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय से अधीक्षक सुरेश कौशिक व एपीसी कुशल कुमार मौजूद रहे।

प्लान बना अध्ययन करवाए

अध्यापकों से बातचीत करते उनके विषय की अध्यापन शैली को भी जाना कि वो किस प्रकार से विद्यार्थियों के साथ अपने विषय को लेकर जाते हैं। उन्होंने सभी अध्यापकों को संबोधित करते कहा कि कक्षा नवमी और ग्यारहवीं में थोड़ा सा जोर लगाने से हमारे कक्षा 10वीं और 12वीं के परिणाम बेहतर होंगे इसलिए कक्षा 9वी और 11वीं में विशेष प्लान बनाकर विषय अध्ययन करवाया जाना चाहिए।

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में सेजल प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद शाखा द्वारा गत वीरवार को बाल भवन, कैथल में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। लगभग 350 प्रतिभागियों ने विभिन्न वर्गों में भाग लिया। इसमें जाट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 11वीं की छात्रा सेजल ने चतुर्थ श्रेणी (कक्षा 9वीं से 12वीं) की पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्केचिंग ऑन द स्पॉट प्रतियोगिता में द्वितीय श्रेणी (कक्षा 6वीं से 8वीं) में हेमन ने चौथा स्थान तथा चतुर्थ श्रेणी (कक्षा 11वीं से 12वीं) में हिमांशु ने तीसरा स्थान प्राप्त किया।

जाट वमावि की कक्षा 11वीं की छात्रा सेजल को सम्मानित करते पदाधिकारी।

ये रहे मौजूद

सभी विजेता विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया है। विजेताओं को 14 नवंबर (बाल दिवस) के अवसर पर प्रशासन द्वारा पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। विद्यालय की संस्कृतिक प्रभारी अध्यापिका मनीषा ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेश कुमार ने विजेता विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। जाट हाई स्कूल सोसायटी के प्रधान राजकुमार बेनीवाल, उपप्रधान बलजिंदर बनवाला, महासचिव एडवोकेट रश्मि ढुल तथा कोषाध्यक्ष बलकार नैन ने विजेताओं को प्रेरित करते आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर सोसायटी के सदस्य डॉ. सत्यवान माजरा, दलवीर कैरो, महावीर राविश, राजपाल गुहना, सन्नी चौशाला, महावीर कुंडू, विक्रम सोगल, कुलदीप सिंह, रजत रापड़िया, स्वतंत्र पाल सिंह और जसबीर मानस उपस्थित रहे।

कैथल। डीएसपी सुशील प्रकाश विद्यार्थियों को संबोधित करते। *फोटो :हरिभूमि*

राष्ट्र निर्माण में पुलिस की भूमिका पर संगोष्ठी

कैथल। पुलिस शहीदी स्मृति के उपलक्ष में डीएसपी सुशील प्रकाश व थाना महिला प्रबंधक एसआई वीना की टीम द्वारा एसबीएस इंटरनेशनल स्कूल सिसला में राष्ट्र निर्माण में पुलिस भूमिका विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। जिसके दौरान डीएसपी सुशील प्रकाश व एसआई वीना द्वारा कैथल के 5 अमर पुलिस शहीदों के जीवन की गौरव गाथा बारे विद्यार्थियों तथा स्टाफ को अवगत करवाया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि एसपी उपासना के मार्गदर्शन अंतर्गत आयोजित किए गये कार्यक्रम दौरान विद्यार्थियों को बताया गया कि पुलिस अफसर होना शान की बात है, पुलिस का कार्य कोई नौकरी नहीं है, अपितु एक सेवा है। पुलिस विभाग के कर्मचारी दिन-रात अपने परिवार की परवाह किए बगैर आमजन की सेवा के लिए चौक-चौराहों पर खड़े रहते है। देश में किसी भी आंतरिक दंगे, असामाजिक गतिविधियों के साथ राजनीतिक जलसा-जुलूसों में पुलिस हर समय मौजूद रहती है

स्वामी सोमानंद सरस्वती ने दिए संस्कारों के सूत्र

पूंडरी। डीएवी पब्लिक स्कूल पूंडरी में चल रहे वैदिक संस्कार पुण्यमास कार्यक्रम के तहत आर्य जगत के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सोमानंद सरस्वती ने विद्यार्थियों को संबोधित किया। यह कार्यक्रम आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उप सभा हरियाणा के तत्वावधान में तथा विद्यालय प्राचार्या साधना बख्शी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में प्राचार्या साधना बख्शी ने गायत्री पटका पहनाकर स्वामी सोमानंद सरस्वती का स्वागत किया। इसके पश्चात स्वामी सोमानंद सरस्वती ने अपने प्रवचन में बच्चों को संस्कार, सात्विक जीवन और नैतिक मूल्यों के महत्व पर विस्तृत प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन, यह कहावत हमें सिखाती है कि हमारा भोजन सात्विक और शुद्ध होना चाहिए, क्योंकि जैसा हमारा आहार होगा, वैसा ही हमारा विचार और व्यवहार भी बनेगा। उन्होंने विद्यार्थियों को माता-पिता और गुरुजनों के प्रति आदर, सम्मान और आज्ञाकारिता का भाव रखने की प्रेरणा दी।

ऑनलाइन ठगी से बचाव के तरीके बताए

कैथल। अक्टूबर माह को "साइबर जागरूकता माह" के रूप में मनाते कैथल पुलिस द्वारा नागरिकों को साइबर अपराधों से बचाने हेतु लगातार जन-जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में थाना साइबर क्राइम टीम से एएसआई प्रदीप कुमार व एचसी कृष्ण की टीम ने बस स्टैंड कैथल पर ऑटो चालकों व आमजन के बीच जागरूकता अभियान चलाया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया की टीम ने इस दौरान जानकारी दी कि साइबर अपराधी अब सोशल मीडिया, ऑनलाइन शॉपिंग, फर्जी कॉल, लोन एप्स व इन्वेस्टमेंट स्कीमों के नाम पर आमजन को ठगने के नए-नए तरीके अपनाते हैं। इसलिए किसी भी अनजान लिंक, कॉल या मैसेज पर भरोसा न करें और अपनी बैंकिंग या निजी जानकारी किसी के साथ साझा न करें। पुलिस टीम ने कहा कि अगर किसी के साथ ऑनलाइन ठगी हो जाती है, तो घबराएं नहीं तुरंत साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करके शिकायत दर्ज करें। शीघ्र शिकायत करने से ठगी गई राशि वापस मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

एएसआई प्रदीप आटो चालकों को साइबर क्राइम से बचाव बारे जानकारी देते।

कैथल। प्रधानाचार्या निवेदिता भट्ट खिलाड़ियों से रूबरू होते।

1500 मीटर की रेस में आदित्य प्रथम

कैथल। आरकेएसडी स्कूल में आज 12वीं कक्षा की एथलैटिक मीट संपन्न हुई। इसमें कबड्डी, बाली-बाल, 1500 मीटर रेस, 100 मीटर रेस, आदि विभिन्न प्रतियोगिताएं रखी गई। कार्यक्रम का आरम्भ स्कूल बैंड की शानदार प्रस्तुति तथा मार्च पास्ट से हुआ। तत्पश्चात कबड्डी का खेल खेला गया जिसमें बारहवीं मेडिकल की टीम ने विजय प्राप्त की। बारहवीं आर्ट्स ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। बाली-बाल में बारहवीं साइंस की टीम विजयी रही। 1500 मीटर की रेस में आदित्य प्रथम स्थान पर तथा विकास द्वितीय स्थान पर रहे। 100 मीटर रेस में विकास प्रथम, कृष द्वितीय और देव तृतीय स्थान पर रहे। प्रधानाचार्या निवेदिता भट्ट ने बताया कि सीबीएसई के दिशा निर्देशों का पालन करते और बच्चों की खेल प्रतिभा को उजागर करने का प्रयास करते हुए इस मीट का आयोजन किया गया है ताकि बच्चे शिक्षा के साथ- साथ खेलों में भी अपनी क्षमता व प्रतिभा दिखा सकें। उन्होंने बताया कि शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों का शैक्षिक, मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक विकास है और स्कूल इस दिशा में सदैव प्रयासरत है।

सतपाल की पौधरोपण की मुहिम लाई रंग

उचाना। निरंतर समाज सेवा में अग्रणी रहने वाले किसान नेता सतपाल करसिंधु पौधरोपण करने के लिए लोगों को प्रेरित करते रहते है। उचाना के रजबाहा रोड पर स्थित अपने मकान के सामने डिवाइडर के बीच खाली जगह पर कुछ माह पहले फूलों सहित अन्य पौधे लगाए गए थे। आसपास के दुकानदारों को भी पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया। अब दुकानदार भी अपनी-अपनी दुकानों के साथ डिवाइडर के बीच में जो मिट्टी है वहां पर फूलों सहित अन्य पौधे लगाने लगे है जिससे डिवाइडर हरा-भरा नजर आने लगा है। जो शुरूआत किसान नेता सतपाल करसिंधु ने की थी उसे प्रेरित होकर अन्य दुकानदार भी फूलों सहित अन्य पौधे लगाने के लिए आगे आ रहे है। दुकानदारों का कहना है कि जो डिवाइडर सड़क के बीचोंबीच बना है वो हरा.भरा नजर आने लगा है। सतपाल करसिंधु ने दुकानदारों के साथ-साथ आमजन से भी अपील करते हुए कहा कि अपने मकानए खेतों, दुकान के आगे अगर जगह है तो जरूर पौधे लगाए। जो सड़क पर डिवाइडर बना है उसके बीच मिट्टी थी।

उचाना के रजबाहा रोड पर डिवाइडर के बीच लगाए गए फूलों सहित अन्य पौधे।

उचाना। जिलास्तरीय कलचरल फेस्टिवल में विजेता प्रतिभागी।

एकल नृत्य में नियति ने मारी बाजी

उचाना। उचाना में जिला स्तरीय पर आयोजित हुई कलचरल फेस्टिवल प्रतियोगिता के 5वीं से 8वीं तक के ग्रुप में एक बार फिर जीएमएसपीएस डूमरखा की छात्राओं ने परचम लहराया है। प्रतियोगिता जींद के डिफेंस कालोनी स्थित राजकीय स्कूल में हुई। छात्रा नियति पुत्री जोगिंद्र ने एकल नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्य स्तर के लिए क्वालीफाई किया। समूह नृत्य में टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता की तैयारी में विद्यालय के जेबीटी शिक्षक बलजीत सिंह, मनोज कुमार, शिक्षिका सुदेश ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस उपलब्धि के लिए विद्यालय के मुखिया सतीश कुमारए प्राचार्या सुनीता शर्मा ने टीम के सभी सदस्यों को बधाई दी व अग्रिम प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी।

नरवाना। खेल महोत्सव में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के साथ अतिथि गण।

खो-खो व कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन

नरवाना। राज्यसभा सांसद सुभाष बराला के मार्गदर्शन में सांसद खेल महोत्सव के अंतर्गत शनिवार को धरोदी गांव में स्थित भारत सीनियर सेकेंडरी स्कूल में खो.खो एवं कबड्डी प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ हुआए जिसके पश्चात खिलाडियों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी करते हुए उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन किया। युवाओं में खेल भावना और ऊर्जा का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में धरोदी गांव के सरपंच अमित ने शिरकत की जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में अमित ढाकल चेयरमैनए मार्केट कमेटीए खंड शिक्षा अधिकारी नरवाना राजेंद्र आजाद, प्राचार्य रविंद्र मित्तल और बलजीत गोयत ने खिलाडियों को प्रोत्साहित किया और विजेताओं को सम्मानित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन राजेश टांक द्वारा किया गया। आयोजन के सफल संचालन में संयोजक दल कुलदीप कमांडो, सुरेंद्र प्रजापत, सतीश धरोदी, सुरेंद्र हथो, अनिल नैन, धर्मबीर खरल, प्रवीण जिंदलए राजेश टांक, कपूर सिंह, करनैल कबड्डी कोच का विशेष योगदान रहा।

जनता चाह रही सत्ता परिवर्तन : डॉ. गुप्ता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता ने कहा कि हरियाणा और देश की मौजूदा स्थिति बेहद चिंताजनक है। प्रदेश अपराध, बेरोजगारी, नशाखोरी और भ्रष्टाचार में डूब चुका है। सरकारें सत्ता के नशे में इतनी अंधी हो चुकी हैं कि उन्हें जनता के दर्द का कोई अहसास ही नहीं है। गुप्ता शनिवार को जींद रोड़ स्थित अग्रवाल धर्मशाला में जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। गुप्ता ने भाजपा और कांग्रेस दोनों पर जमकर निशाना साधा। कार्यक्रम की शुरुआत शहीद भगत सिंह और बाबा साहब अम्बेडकर के चित्र पर पुष्पार्पित करके और दीप प्रज्वलित करके हुई।

आप के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित करते।

ये रहे मौजूद

डॉ. गुप्ता ने कहा कि हाल ही में एडीजीपी वाई. पूर्ण कुमार और एएसआई सुशील की आत्महत्या सरकार की सबसे बड़ी असफलता है। जब वर्दी में तैनात अधिकारी खुद को असुरक्षित और असहाय महसूस करें, तो यह सरकार की नाकामी का सबसे बड़ा सबूत है। कहा कि इस प्रदेश में न तो किसान सुरक्षित है, न जवान, न ही मजदूर। हर वर्ग की आवाज को कुचलने का प्रयास किया जा रहा है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि देश की जनता अब सत्ता परिवर्तन ही नहीं, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन चाहती है। लेकिन भाजपा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर बार जनता को जात-पात और धर्म की राजनीति में उलझाकर वोट हासिल कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि आज गांव के गरीब और मजदूर परिवारों के बच्चे विदेशों में पलायन करने को मजबूर हैं। किसानों को अपनी फसलों के वाजिब दाम नहीं मिल रहे। जवान आत्महत्या कर रहे हैं और सरकार नशाखोरी पर रोक लगाने में पूरी तरह विफल साबित हुई है। प्रवक्ता सुरेन्द्र अहलावत, जिला प्रभारी डॉ. रजनीश जैन, प्रदेश उपाध्यक्ष रणबीर लोहान, प्रदेश उपाध्यक्ष शिक्षा प्रकोष्ठ सतबीर गोयत, प्रदेश प्रवक्ता सुखबीर चहल, पूर्व मंत्री नरेंद्र शर्मा, जगतार सिंह, मालविंदर सिंह, निरंजन गुर्जर, अमरेन्द्र, जसविंद्र खरका आदि उपस्थित रहे।

अलेवा। नगूरां पंचायत भवन में शिविर में भाग लेती दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना की पात्र महिलाएं।

लाडो लक्ष्मी योजना के तहत लगा शिविर

अलेवा। नगूरां गांव के पंचायत भवन में दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना के तहत दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता सीपीएलओ मोनिका ने की। इस दौरान दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना में शामिल नामों का वैरिफिकेशन किया। जिसमें अधिकतर मामले आधार कार्ड के अपडेट न होना, बिजली बिलों के क्लीयर न होने तथा डोमीसाइल से संबंधित मामले देखने को मिले। पंचायत विभाग की सीपीएलओ मोनिका ने बताया कि प्रदेश सरकार द्वारा दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना के तहत पात्र लोगों के कागजातों के वैरिफिकेशन तथा अन्य मामलों को लेकर नगूरां पंचायत घर में शिविर लगाया है। जिसमें इस योजना से जुड़े लोगों के कागजातों को पूरी बारीकी से जांचा जा रहा है। जहां कागजातों में कमी मिलती है। उनको दुरुस्त करने के लिए बोला जा रहा है। इस योजना से जुड़े लोगों के कागजातों में काफी कमियां देखने को मिल रही है। जिसके कारण लोगों की आइडी अपडेट होने में दिक्कत आ रही है। इस अवसर पर आंगनबाड़ी वर्कर सुदेश, निर्मला, सुनिता, विद्या तथा आशा वर्कर जुगेश आदि उपस्थित थी।

राज्य सूचना आयुक्त ने सफीदों व पिल्लूखेड़ा मंडियों का किया निरीक्षण

आढ़तियों को नहीं होगी कोई परेशानी: कर्मवीर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

हरियाणा राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी ने शनिवार को सफीदों विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने सफीदों व पिल्लूखेड़ा अनाज मंडियों में पहुंचकर धान खरीद कार्य का औचक निरीक्षण किया और किसानों व आढ़तियों से बातचीत की। निरीक्षण के दौरान कर्मवीर सैनी ने मंडियों में सरकार द्वारा की गई व्यवस्था की सराहना करते हुए कहा कि राज्य सरकार द्वारा फसल खरीद कार्य को लेकर किए गए प्रबंध बेहद बेहतर और सुव्यवस्थित हैं। मंडियों में किसानों, आढ़तियों और मजदूरों को किसी भी प्रकार की परेशानी न होए इसके लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी स्वयं प्रदेश की सभी मंडियों पर नजर रखे हुए हैं और संबंधित अधिकारियों को समय-समय पर आवश्यक दिशा-निर्देश दे रहे हैं। जिनके फलस्वरूप मंडियों में धान की खरीद प्रक्रिया पूरी तरह सुचारू ढंग से चल रही है। हरियाणा राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी ने कहा कि सफीदों क्षेत्र में स्थानीय विधायक भी स्वयं मंडियों में पहुंचकर खरीद कार्य की निगरानी कर रहे हैं ताकि किसी स्तर पर कोई लापरवाही न हो। सरकार की स्पष्ट प्राथमिकता है कि मंडियों में आने वाली किसानों की फसल का एक-एक दाना खरीदा जाए और उन्हें समय पर भुगतान सुनिश्चित किया जाए। इससे न केवल किसानों का मनोबल बढ़ेगा बल्कि प्रदेश की कृषि अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी।

जींद। फसल खरीद का जायजा लेते कर्मवीर सैनी। *फोटो :हरिभूमि*

किसान आत्मनिर्भर और खुशहाल बनें

कर्मवीर सैनी ने बताया कि मंडियों में फसल की तौल, भुगतान और उठान की प्रक्रिया पारदर्शी और डिजिटल माध्यम से की जा रही है ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता की गुंजाइश न रहे। राज्य सरकार का उद्देश्य है कि हरियाणा का किसान आत्मनिर्भर और खुशहाल बने। वहीं राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी सफीदों नगर के नंदी गौ सेवा धाम में पहुंचे। जहां पर उन्होंने गऊओं को गुड़ खिला कर गौ सेवा का संदेश दिया। गौशाला प्रबंधन की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर कर्मवीर सैनी का स्वागत किया। इसके उपरांत उन्होंने जींद शहर की रानी तालाब के पास स्थित गुरुद्वारा में गुरु तेग बहादुर के प्रकटोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करते हुए सिख संगत को संबोधित किया। कहा कि गुरु जी को जो इतिहास रहा हैए वह देश भक्ति से प्रोत, सेवा, समर्पण एवं गरीबों की सुरक्षा का रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान उनके साथ राइस मिल्स एसोसिएशन सफीदों के प्रधान सुभाष जैन, आढ़ती एसोसिएशन सफीदों के प्रधान कृष्ण गोपाल, मार्केट कमेटी सफीदों के चेयरमैन चंद्र सैनी, उप चेयरमैन मदन गोयल, नगर पालिका चेयरमैन प्रतिनिधि संजय अधलखा उर्फ बिट्टा सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

नरवाना। जागरूकता शिविर में भाग लेने वाले अभिभावक व शिक्षक।

समावेशी शिक्षा पर जागरूकता शिविर

नरवाना। पीएम श्री राजकीय वमावि में दिव्यांग छात्र-छात्राओं के अभिभावकों आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं नरवाना ब्लॉक के सभी विद्यालयों के सामान्य शिक्षकों के लिए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद के सौजन्य से दो दिवसीय समावेशी शिक्षा पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया जिसमें सामान्य अध्यापकों, विद्यालय प्रबंधन समिति, आंगनबाड़ी वर्कर्स एवं दिव्यांग बच्चों के माता-पिता ने ब्लॉक स्तरीय शिक्षा पर जागरूकता कार्यक्रम में भाग लिया।

सूचना

मैं, शीला देवी विधवा श्री नरसी सिंह निवासी गांव मोहना, तहसील पूण्डरी, जिला कैथल, हरियाणा बयान करती हूं कि मेरा पुत्र रवि कुमार मेरे कहने-सुनने से बाहर है। इसलिये मैं इसको अपनी चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल करती हूं। इससे लेन-देन, व्यवहार करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

खबर संक्षेप

माता भ्रामरी शक्तिपीठ पुजारी श्याम लाल कौशिक से आशीर्वाद लेते हुए विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री।

माता भ्रामरी शक्तिपीठ से लिया आशीर्वाद

उचाना। देवभूमि बनभौरी स्थित माता भ्रामरी शक्तिपीठ के पुजारी श्याम लाल कौशिक से विधायक देवेंद्र चतरभुज अत्री ने आर्शीवाद लिया। राजेंद्रा कालोनी स्थित भाजपा नेता महेंद्र लोधर के निवास पर विधायक पहुंचे थे। विधायक ने कहा कि माता भ्रामरी की मान्यता प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में है। माता की पूजा.अर्चना करने देश के कौने.कौने से माता के भक्त आते है। हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि मंदिर पुजारी ने आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला है। हमारे आसपास ऐसे प्राचीन मंदिर का होना भी हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

आढ़ती वेलफेयर एसो के प्रधान चुने गए सोनू

जींद। नई अनाज मंडी के आढ़तियों ने शनिवार को बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लेते हुए सोनू भारद्वाज बुआना को आढ़ती वेलफेयर एसोसिएशन का दोबारा से प्रधान चुना है। महाबीर जागलान की अध्यक्षता में मंडी की धर्मशाला में हुई इस बैठक में तमाम आढ़तियों ने सोनू भारद्वाज द्वारा अतीत में किए गए कार्यों पर सराहना की मोहर लगाते हुए एक मत से उनको दोबारा से यह जिम्मेदारी दे दी। इस दौरान राजा ढांडा को एसोसिएशन के संरक्षक की जिम्मेदारी दी गई। इस अवसर पर रमेश सांगवान, धर्मवीर खर्ब, राकेश गोस्वामी बब्लू रेढ़ू, रमेश भारद्वाज, महाबीर, संदीप गोस्वामी आदि मौजूद थे।

युवाओं ने पूर्व दुष्यंत चौटाला से की मुलाकात

उचाना। जेजेपी के पूर्व हलकाध्यक्ष रहे विश्ववीर काला नंबरदार की अगुवाई में जिले जींद के युवाओं ने पंचकूला में पूर्व डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला से मुलाकात की। नंबरदार ने कहा कि दुष्यंत चौटाला की अगुवाई में जब जेजेपी सत्ता का हिस्सा थी तो हर वर्ग के लिए कार्य किए। जो-जो वायदे जेजेपी ने प्रदेश की जनता से किए उन वायदों को पूरा किया। चंडीगढ़ में प्रदेश के लोगों की सुनवाई के लिए दुष्यंत चौटाला हर समय मिलते थे। आज लोगों को दुष्यंत चौटाला की याद फिर से आने लगी है। प्राइवेट क्षेत्र में 75 प्रतिशत युवाओं को रोजगार का कानून बनाने के लिए दुष्यंत चौटाला ने जो प्रयास किए थे वो आज नहीं तो कल जरूर रंग लगाएंगे। 2029 में दुष्यंत चौटाला प्रदेश में युवा मुख्यमंत्री होंगे। किसानों को उनकी फसल का भाव नहीं मिल रहा है।

नहीं हो पाया गर्भतवी महिलाओं का रजिस्ट्रेशन के बाद आरसीएच नंबर जनरेट

एमपीएचडब्ल्यू की ऑनलाइन काम छोड़ हड़ताल से बढ़ी परेशानी

यूविन पोर्टल पर ऑनलाइन काम नहीं होने से नहीं मिल पाए अभिभावकों को बच्चों के टीकाकरण के मैसेज।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

एमपीएचडब्ल्यू की ऑनलाइन काम छोड़ हड़ताल के पहले ही दिन आमजन की परेशानियां बढ़ गई हैं। ऑनलाइन एंट्री न होने के चलते गर्भवती महिलाओं का रजिस्ट्रेशन के बाद आरसीएच नंबर नही मिल पाया। जिला में अल्ट्रासाउंड के लिए आरसीएच नंबर जरूरी किया गया है। इसके अलावा एमपीएचडब्ल्यू कर्मियों ने स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित किए जा रहे कई तरह के ऑनलाइन एप कार्यक्रमों एंट्री नही की। स्वास्थ्यकर्मियों ने साफ चेताया कि जब तक उनकी मांगें पूरी नही होती ऑनलाइन काम का बहिष्कार किया जाएगा। ऑनलाइन काम के बहिष्कार की जानकारी एमपीएचडब्ल्यू द्वारा पहले ही स्वास्थ्य अधिकारियों के माध्यम से ज्ञापन सौंप कर स्वास्थ्य विभाग को करवा दी थी।

ऑनलाइन एप पर काम करते हैं एमपीएचडब्ल्यू

एमपीएचडब्ल्यू वर्ग अनमोल, निश्चय, एमसीडी, निरोगी हरियाणा, यूविन, एनीमिया मुक्त भारत, आईएचआईपी, आशा पे एप और आभा कार्ड जनरेशन जैसे विभिन्न कार्यक्रमों में अलग-अलग कर्मचारियों की नियुक्ति के बावजूद रिपोर्टिंग और डेटा अपलोड करते हैं।

अनमोल एप : - अनमोल एप पर गर्भवती का डाटा डाला जाता है। इसके बाद उसका रजिस्ट्रेशन होता है। रजिस्ट्रेशन के बाद ही आरसीएच नंबर जनरेट होता है। जिससे उसका अल्ट्रासाउंड हो पाता है। बिना आरसीएच नंबर के अल्ट्रासाउंड पर बैन है।

एनसीडी : एनसीडी के माध्यम से बीपी, शुगर व अन्य बीमारियों की जानकारी फीड की जाती है। इसकी भी एमपीएचडब्ल्यू ने एंट्री बंद कर दी है।

यूवीन : यूवीन के माध्यम से बच्चों के टीकों को ऑनलाइन किया जाता है। इसमें बच्चे को टीका लगने से पहले और बाद में अभिभावक के मोबाइल नंबर पर जानकारी भेजी जाती है ताकि बच्चे किसी तरह के टीके से वंचित न रहें।

आभा कार्ड : आभा कार्ड के माध्यम से पैशेंट की जानकारी फीड की जाती है ताकि उसे बार-बार जानकारी दर्ज न करवानी पड़े।

जींद। बैठक करते हुए एमपीएचडब्ल्यू। फोटो : हरिभूमि

पूर्व नोटिस अनुसार ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टलों पर कार्य ठप

बहुउद्धेशीय स्वास्थ्य कर्मचारी एसोसिएशन के राज्य प्रेस सचिव संदीप कुंडू ने कहा कि पूर्व नोटिस अनुसार 25 अक्टूबर शनिवार से ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टलों पर कार्य ठप कर दिया है। सरकार द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों के लिए नियुक्त कर्मचारियों की जवाबदेही तय किए बगैर सारा ऑनलाइन कार्य एमपीएचडब्ल्यू वर्ग के कंधों पर डाल दिया गया था। उस विषय पर सरकार से बार-बार पत्राचार किया गया लेकिन कोई संज्ञान नहं लिया गया। जिसके चलते एसोसिएशन ने सरकार को सूचना देते हुए ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टलों के बहिष्कार का ऐलान किया था। इस ऐलान के बाद अनमोल पोर्टल, एनसीडी, यूवीन, आशा पे एप, आभा कार्ड, निक्षय पोर्टल, डिजीज सर्वेलेंसएएनीमिया मुक्त भारतएसुरक्षित नारी सुरक्षित परिवार पोर्टल सहित तमाम ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टल पर कार्य रोक दिया गया है। एसोसिएशन के राज्य महासचिव सहदेव आर्य ने बताया कि जबतक सरकार द्वारा पहले नियुक्त कर्मचारियों की जवाबदेही तय नही की जाती, अतिरिक्त कार्य के लिए मानव संसाधन ऑपरेटर की नियुक्ति नहीं की जाती व जरूरी संसाधन लैपटॉप एटैबलेट व इंटरनेट की सुविधा नहीं दी जाती प्रदेशभर में ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टलों का बहिष्कार जारी रहेगा और आमजन को होने वाली परेशानी की पूर्ण जिम्मेदारी सरकार एवं विभाग की होगी।

शनिवार को फिलहाल कोई असर नहीं रहा

एमपीएचडब्ल्यू द्वारा ऑनलाइन डाटा फीड का शनिवार को फिलहाल कोई असर नही रहा है। पूरी रिपोर्ट एक महीने में ही कंपाइल होती है। लगभग 200 एमपीएचडब्ल्यू हड़ताल पर थे। जब रिपोर्ट कंपाइल होगी, तभी पता चलेगा कि कोई काम प्रभावित हुआ है या -**डा. विजेंद्र ढांडा,** डिप्टी सीएमओ

आईएचआईपी: आईएचआईपी ऐसा पोर्टल है, जहां भी कहीं बुखार, खसरा या अन्य बीमारी के मरीज मिलते हैं, उनकी जानकारी दर्ज की जाती है ताकि सीधे स्वास्थ्य मुख्यालय को रिपोर्ट हो। इसका फायदा यह होता है कि मुख्यालय को बीमारी से संबंधित जानकारी मिलती रहती है। अगर स्पेशल टीमों की जरूरत हो तो आर्गेनाइज करवाई जाती हैं।

निक्षय पोर्टल :- निक्षय पोर्टल पर क्षय रोगी (टीबी) से संबंधित मरीजों की जानकारी फीड की जाती है।

अपराधों पर सरकार का नियंत्रण नहीं

हरियाणा में पूरी तरह से जंगलराज : रिषिपाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

- जनता में भय और असुरक्षा का माहौल व्याप्त

कांग्रेस जिलाध्यक्ष रिषिपाल हैबतपुर।

कांग्रेस के जिला प्रधान रिषिपाल हैबतपुर ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति पूरी तरह से चरमरा चुकी है और आज प्रदेश में जंगलराज जैसी स्थिति बन चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार अपराधों पर नकेल कसने में पूरी तरह विफल साबित हुई है। जिससे जनता में भय और असुरक्षा का माहौल व्याप्त है। रिषिपाल हैबतपुर ने कहा कि प्रदेश में अपराध की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं और अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हो चुके हैं कि वे अब खुलेआम वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। हाल ही में अंबाला में एक रूसी पर्यटक से लूट, सोनीपत में पिता व पुत्र की हत्या और व्यापारी से लूट जैसी घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि कानून व्यवस्था पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है। उन्होंने कहा कि केवल बड़े शहर ही नही बल्कि छोटे कस्बों और गांवों में भी अपराधियों का आतंक बढ़ गया है। जींद जिले में ही पिछले कुछ महीनों में दो दर्जन से अधिक हत्याएं हो चुकी हैं लेकिन पुलिस और प्रशासन की ओर से ठोस कार्रवाई नजर नहीं आती। उन्होंने कहा कि अपराधियों को कानून का कोई भय नहीं रह गया है। क्योंकि सरकार का ध्यान जनता की सुरक्षा पर नहीं बल्कि राजनीति और प्रचार पर केंद्रित है।

जुमलेबाजी तक सीमित

उन्होंने कहा कि जनता को सुरक्षा और न्याय देने का दावा करने वाली सरकार जुमलेबाजी तक सीमित रह गई है। जबकि धरातल पर स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत है। जब आम नागरिक खुद को असुरक्षित महसूस करने लगेए तो यह किसी भी लोकतांत्रिक सरकार के लिए सबसे बड़ी नाकामी होती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं, व्यापारियों, मजदूरों और किसानों के साथ अपराध की घटनाएं बढ़ रही हैं लेकिन शासन व प्रशासन बेपरवाह बना हुआ है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के लोग अब अपराध और अराजकता के दौर से गुजर रहे हैं। जहां पुलिस तंत्र का भय खत्म हो चुका है और अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी इस मुद्दे को लेकर जनता की आवाज बुलंद करेगी और सरकार से जवाब मांगेगी कि आखिर प्रदेश में कानून व्यवस्था की ऐसी हालत क्यों हुई। हैबतपुर ने मांग की कि सरकार तुरंत अपराध नियंत्रण के लिए विशेष अभियान चलाए। पुलिस तंत्र को मजबूत करे और अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित करे।

मंडी में धान की खरीद को लेकर गंभीरता से जिम्मेदारी निभाएं अधिकारी

कैथल। राज्यस्तरीय समीक्षा बैठक के बाद डीसी प्रीति ने धान खरीद प्रक्रिया की समीक्षा की। उन्होंने डीएफएससी सहित खरीद एजेंसियों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि धान की खरीद में किसी भी प्रकार की अनियमितता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। दूसरे राज्यों से यदि धान आ रहा है तो उसकी जांच के लिए संबंधित अधिकारी सड़कों पर निगरानी बढ़ाएं। जहां जरूरत हो, वहां नाके लगाकर धान की जांच करें। अनावश्यक किसानों को परेशान न करें, साथ ही यदि दूसरे प्रदेशों से नियमों का उल्लंघन करते हुए धान लाया जा रहा है तो उस पर सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

गन्ने के मूल्य में बढ़ोतरी मील का पत्थर

- भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मार्केट कमेटी पूंडरी चेयरमैन सुभाष ने कहा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ पूंडरी

भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य मार्केट कमेटी पूंडरी चेयरमैन सुभाष हजवाना ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने हरियाणा के अन्नदाताओं को बड़ा तोहफा देते हुए गन्ने और गेहूं के समर्थन मूल्य में रिकॉर्ड तोड़ वृद्धि की है। मुख्यमंत्री ने गन्ने के समर्थन मूल्य में 15 प्रति क्विंटल और गेहूं के समर्थन मूल्य में 160 प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की घोषणा की। यह निर्णय किसानों के लिए दिवाली से भी बड़ा उपहार साबित हुआ है। चेयरमैन सुभाष हजवाना ने चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित किसान मोर्चा के धन्यवाद समारोह में शामिल होकर लौटने के बाद पूंडरी कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री का यह कदम प्रदेश के किसानों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में ऐतिहासिक साबित होगा। भाजपा सरकार किसानों के हितों को सर्वोपरि रखकर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने किसानों के हित में अब तक कई बड़े निर्णय लिए हैं, जिसमें गन्ने के समर्थन मूल्य में 15 की वृद्धि, जिससे अब हरियाणा 415 प्रति क्विंटल की दर से गन्ना खरीदने वाला देश का पहला राज्य बन गया है। गेहूं के समर्थन मूल्य में 160 प्रति क्विंटल की वृद्धि, जिससे किसानों को सीधा आर्थिक लाभ मिलेगा।

सरकार 14 फसलों को समर्थन मूल्य पर खरीद रही है

हरियाणा सरकार 14 फसलों को समर्थन मूल्य पर खरीदने वाला देश का पहला राज्य है। बीते 11 वर्षों में प्रदेश सरकार ने किसानों को रिकॉर्ड तोड़ मुआवजा प्रदान किया है। सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। किसानों को फसलों के उचित दाम, समय पर भुगतान और प्राकृतिक आपदाओं की स्थिति में मुआवजा देने में हरियाणा सरकार देशभर में उदाहरण पेश कर रही है।

जुलाना। प्रतियोगिता में दमखम दिखाते खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

सागर और किरण दौड़ में तो अक्षय और तनु लंबी कूद में रहे अव्वल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जुलाना

मेरा युवा भारत संस्था द्वारा जुलाना खंड में खेलों का आयोजन करवाया गया। जिसमें कबड्डी, लंबी कूद और दौड़ शामिल रही। जिसमें करीब 120 खिलाडिय़ों ने हिस्सा लिया कार्यक्रम में मुख्यअतिथि के रूप में सोनिया इंटरनेशनल स्कूल के चेयरमैन समुद्र लाठर ने शिरकत की। उन्होंने कहा कि खेलों से खिलाड़ी का मानसिक और शारीरिक विकास होता है। खेलों से खिलाडिय़ों में एक लीडर की गुणवत्ता आती है और समय के सदुपयोग और साथ में काम करने की भावना पैदा होती है। चंद्रशेखर आजाद युवा क्लब के प्रधान अजीत लाठर ने कहा कि मेरा युवा भारत द्वारा समय-समय पर ऐसे खेलों का आयोजन करवाया जाता है। जिसमें ग्रामीण युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है। दौड़ में सागर ने प्रथम तरुण ने द्वितीय और नकुल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह लंबी कूद में अक्षय ने प्रथमए अंकित ने द्वितीय और सागर ने तृतीय स्थान प्राप्त किया और कबड्डी में करसोला की टीम प्रथम तथा देवरड़ की टीम दूसरे स्थान पर रही। लड़कियों की लंबी कूद में तनु ने प्रथम अंतिम ने द्वितीय और किरण ने तीसरा स्थान प्राप्त किया और दौड़ में किरण ने प्रथम और तनु ने दूसरा और निधि ने तीसरा स्थान प्राप्त किया और कबड्डी में लुदाना की टीम कबड्डी में प्रथम स्थान, सोनिया इंटरनेशनल स्कूल की टीम दूसरे स्थान पर रही। नशा मुक्ति अभियान जींद के इंचार्ज नरेश कुमार ने युवाओं से अधिक से अधिक खेलों में भाग लेने के अपील की और कहा कि युवा खेलों से जुड़े और नशे को छोड़ें साथ में उन्होंने बताया कि अगर आपके आसपास भी कोई नशा करता है या आपको नशे के लिए कोई प्रेरित करता है तो आप उनकी शिकायत हमें दे सकते हैं। प्रशासन के द्वारा पूरी मदद की जाएगी और नाम देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा और। प्रतियोगिता मेरा युवा भारत के जुलाना ब्लॉक से स्वयंसेवक मोनू लाठर और ममता की देखरेख में संपन्न हुई।

पांच दिन में पराली की गांठ बनाने की मशीन नहीं दी तो जलाएं पराली

जींद। बैठक में भाग लेते हुए किसान नेता। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

भारतीय किसान यूनियन ने प्रशासन व सरकार को चेताया है कि कि यदि पांच दिन में उनको पराली की गांठ बनाने की मशीन नहीं दी तो किसान पराली जलाने पर मजबूर हो जाएंगे। भाकियू ने यह चेतावनी रामराय गांव में नौगामा खाप चबूतरे पर हुई बैठक में दी। बैठक की अध्यक्षता भाकियू जींद के 21 गांव के प्रधान जयवीर राजपुरा भैण ने की। भाकियू के जिला प्रधान बिंदर नंबरदार ने कहा कि किसानों के पास पराली प्रबंधन का कोई उपाय नहीं है। प्रशासन व सरकार को चाहिए कि वह किसानों को पराली की गांठ बनाने की मशीन उपलब्ध करवाएए ताकि किसान पराली का प्रबंधन कर सकें। उन्होंने कहा कि किसानों को यदि पांच दिन में पराली की गांठ बनाने की मशीन उपलब्ध नहीं करवाई तो किसानों को मजबूरी में पराली को जलाना पड़ेगा।

विदेश से पैसे भेजने के नाम पर हो रही साइबर ठगी से रहें सावधान : एसपी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ कैथल

साइबर अपराधियों द्वारा आमजन को ठगने के लिए नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं, जिनमें हाल ही में एक खतरनाक ट्रेंड सामने आया है। एसपी उपासना ने जानकारी देते हुए बताया की साइबर अपराधी विदेश में गए किसी परिचित या रिश्तेदार की फेसबुक, इंस्टाग्राम या अन्य सोशल साइट पर फर्जी प्रोफाइल तैयार कर लोगों से संपर्क करते हैं और उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि वह विदेश से भारत में पैसे भेज रहा है। जिस बारे वह अपनी फैमिली को नहीं बता सकता। जब वह वापिस आएगा तब आपसे पैसे ले लेगा। इस झांसे को और मजबूत करने के लिए ठग फर्जी बैंक अधिकारी बनकर पीड़ित को फोन कॉल करते हैं और कहते हैं कि आपके खाते में विदेश से पैसे आने हैं तथा यह केवल एक कन्फर्मेशन कॉल है। एसपी ने बताया की जब पीड़ित इस बहकावे में आ जाता है तो इसके बाद ठग अलग-अलग प्रकार की मजबूरी बताना शुरू कर देते हैं। कभी वे कहते हैं कि उनका वीजा समाप्त होने वाला है और इसके लिए तुरंत पैसे चाहिए, तो कभी किसी ट्रैवल एजेंट को पैसे देने की बात कहते हैं और उससे संपर्क करने के लिए मजबूर करते हैं। इसके साथ ही ठग यह भी विश्वास दिलाते हैं कि वे जो रकम भेज चुके हैं वह कुछ समय में आपके पास आ ही जाएगी, इसलिए आप अभी अपने पास से पैसे भेज दो और बाद में आने वाली रकम में से काट लेना। इस प्रकार की झूठी बातों और विश्वासघात के चलते कई लोग उनके बताए अनुसार पैसे भेज देते हैं और ठगी का शिकार बन जाते हैं।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हुड्डा कॉम्पलेक्स, डी.आर.डी.ए. के सामने, जीन्द
हरिभूमि कार्यालय, करनाल रोड, जाट स्टेडियम के सामने, कैथल
फोन : 8295157800, 8814999186, 8814999166, 9253681005

2014 से छोटूराम किसान शिक्षा समिति पर लगा है प्रशासक

जाट धर्मशाला में बैठक करके 11 सदस्यीय कमेटी का किया गठन

मुख्यमंत्री से मिलकर चुनाव अधिकारी नियुक्त करने की होगी मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जींद

जींद। बैठक करते हुए सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत। फोटो : हरिभूमि

जाट धर्मशाला में सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत मंच की बैठक सोमदत्त शर्मा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में छोटूराम किसान शिक्षा समिति का चुनाव करवाने पर चर्चा हुई। बैठक में सभी खाप प्रधानों ने कहा कि इस संस्था पर पिछले 11 सालों से प्रशासक लगा हुआ है। पहले कुछ अदालत में मामले होने के कारण चुनाव नहीं हो रहे थे। अब अदालत से मामले वापस ले लिए गए हैं तथा मतदाता सूची को भी सही कर लिया गया है। ऐसे में अब संस्था के चुनाव होने चाहिएं ताकि समाज का कोई व्यक्ति इसका प्रधान नियुक्त हो और संस्था सही तरीके से चले। बैठक में कहा गया कि यह एक एडिड संस्था है।

स्थानीय प्रशासन कोई कार्रवाई नहीं कर सकता

स्थानीय प्रशासन इस पर कोई कार्रवाई नहीं कर सकता। इसलिए जल्द ही मुख्यमंत्री से मिल कर चुनाव अधिकारी लगवाकर चुनाव करवाए जाएंगे। इसके लिए पंचायत में 11 सदस्यीय कमेटी बनाई गई। यह कमेटी ही अब आगामी कार्रवाई करेगी। सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत मंच के प्रवक्ता उमेद सिंह जागलान ने कहा कि अब संस्था में किसी प्रकार की कोई कमी नही हैं, जो भी मतदाता सूची या अन्य चीजों को लेकर विवाद थेए वह अब खत्म हो चुके हैं। ऐसे में संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए अब प्रधान समेत अन्य कार्यकारिणी का चुनाव करवाना जरूरी है। बैठक को माजरा खाप के प्रधान गुरविंदर सिंह संधू, कंडेला खाप प्रधान ओमप्रकाश कंडेला, सूरजभान घसो, उझाना खाप के रोहताश, बलबीर सिंह चहल, बिजेंद्र सिंह मलिक, हरदीप सिंह दुहन, एडवोकेट रविंद्र सिंह ढांडा, बिनैण खाप से बलबीर सिंह अमरगढ़, कुंडू खाप से दिलबाग कुंडू, बूरा खाप से मास्टर रामचंद्र बूरा, खटकड़ खाप से हरिकेश खटकड़, नौगामा खाप प्रधान सुरेश बहबलपुर, बलराज कुंडू ने संबोधित किया। सभी ने जल्द से जल्द संस्था के चुनाव करवाने की बात पर जोर दिया।

चार शिक्षण संस्थाएं चलाती हैं छोटूराम शिक्षा समिति

छोटूराम शिक्षा समिति शहर में चार शिक्षण संस्थाएं चलाती है। इनमें छोटूराम जाट किसान कालेज, छोटूराम जाट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छोटूराम जाट कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा छोटूराम किसान आईटीआई हैं। शहर की यह बहुत बड़ी संस्थाएं हैं।

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

कवर स्टोरी
एन. के. अरोड़ा

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनिया हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़न वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ाने भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेन एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के किस्से पूरी तरह से छा गए और हर किसी को पता लग गया कि उड़ने वाली कारें अब विज्ञान कथा भर नहीं हैं, वास्तविक जिंदगी का हिस्सा बनने की कगार पर हैं। निकट भविष्य में इनका उपयोग शहरी परिवहन, आपातकालीन सेवाओं और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बहुत कॉमन हो जाएगा।

सुरक्षा है बड़ा मुद्दा: जिस तरह इन दिनों चीन में हुई हवाई दुर्घटना के कारण दो एयर टैक्सियों के आपस में भिड़ जाने पर खूब चर्चा हो रही है, उससे उड़ने वाली कारों यानी ईवीटीओएल की तकनीकी सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। माना जाता है कि ऐसी काल्पनिक कारों का यह पहला मिड एयर कॉलिशन है। लेकिन यह अकेला कारण भी नहीं है, जिसकी वजह से इन उड़न कारों की बातें हो रही हैं। दरअसल, अब नए मॉडल के नई लाइफस्टाइल को सपोर्ट करने वाले शहरों के बसाए जाने की बात भी हो रही है। इन्हीं नए शहरों की जरूरतों को ध्यान में रखकर अर्बन एयर मोबिलिटी पर जबर्दस्त चर्चा हो रही है, क्योंकि भविष्य के शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होगा कि वे ट्रैफिक में घंटों फंसे रह सकें। इसलिए ऐसी कारों की जरूरत जबर्दस्त ढंग से पैदा होने वाली है, जो हवा में उड़कर मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह कई किलोमीटर दूर पहुंच सकती हैं।

सिर्फ सुरक्षा का ही नहीं, वास्तव में इन वाहनों की उड़ान और लैंडिंग की अनुमति भी एक बड़ी समस्या होगी, जिस पर इन दिनों

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

अवेयरनेस / संध्या सिंह

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती

है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान

हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

कविता
आरती आस्था

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

लघुकथा / अलका जैन 'आराधना'

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तक: प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह), **लेखिका:** सविता सिंह, **मूल्य:** 199 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

आयोजन / वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारे और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा / प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रृंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रृंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़, हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसे का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा / निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो,

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल'

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *